अंक : १२८

अक्तूबर-दिसंबर २०१४

कथाबिंब

कथाप्रधान त्रैमासिक पत्रिका

कहानियां

मालती जोशी • डॉ. देवेंद्र सिंह • डॉ. निरुपमा राय

गोविंद उपाध्याय • विवेक द्विवेदी

आमने-सामने — विवेक द्विवेदी

सागर-सीपी — डॉ. शांति सुमन

वातायन — तस्लीना नसरीन

१५ रुपये

अक्तूबर-दिसंबर २०१४
(१९७९ से प्रकाशित)

कथाबिंब

कहानियां

अपहरण - **मालती जोशी** ७
सर्वशिक्षा - **डॉ. देवेंद्र सिंह** ११
कुसुममाला - **डॉ. निरुपमा राय** १७
कमज़ोर पार्टी - **गोविंद उपाध्याय** २३
कूलर - **विवेक द्विवेदी** २७

लघुकथाएं

सजा / **नरेंद्र कौर छाबड़ा** ३४
नाम में क्या रखा है ? / **चित्त रंजन गोप** ३७
स्त्री की जीत / **उर्मि कृष्ण** ४७

ग़ज़लें / कविताएं

ग़ज़ल / **जमुर्रद बेगम "शाद"** १०
मैं अपराजिता (कविता) / **माधवी कपूर** १६
मर जाणियां (कविता) / **जसप्रीत कौर "फलक"** १९
कविता / **डॉ. दिनेश कुमार श्रीवास्तव** २२
ग़ज़ल / **डॉ. दीप बिलासपुरी** ३३
दो ग़ज़लें / **नवीन माथुर "पांचोली"** ३४

स्तंभ

"कुछ कही, कुछ अनकही" २
लेटर बॉक्स ४
"आमने-सामने" / **विवेक द्विवेदी** ३५
"सागर-सीपी" / **डॉ. शांति सुमन** ३९
"**बाइस्कोप**" **(सविता बजाज)** / सुधा शिवपुरी ४४
"**वातायन**" / तस्लीना नसरीन ४८
पुस्तक-समीक्षा ५०

प्रधान संपादक
डॉ. माधव सक्सेना "अरविंद"
संपादिका
मंजुश्री
संपादन सहयोग
जय प्रकाश त्रिपाठी
अश्विनी कुमार मिश्र
अशोक वशिष्ठ
हम्माद अहमद ख़ान

संपादन-संचालन पूर्णतः
अवैतनिक तथा अव्यवसायिक

●सदस्यता शुल्क●
आजीवन : ५०० रु., **त्रैवार्षिक** : १२५ रु.,
वार्षिक : ५० रु.,
(वार्षिक शुल्क ५ रु. के डाक टिकटों के रूप में भी स्वीकार्य है)
कृपया सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा केवल **"कथाबिंब"** के नाम ही भेजें.

●रचनाएं व शुल्क भेजने का पता●
ए-१० बसेरा, ऑफ दिन-क्वारी रोड,
देवनार, मुंबई-४०० ०८८.
फोन : २५५१ ५५४१, ९८१९१६२६४८

e-mail : kathabimb@yahoo.com
www.kathabimb.com

● **न्यूयॉर्क संपर्क** ●
Naresh Mittal
(M) 845-304-2414
Namit Saksena
(M) 347-514-4222
● **शिकागो संपर्क** ●
Tulika Saksena
(M) 224-875-0738

एक प्रति का मूल्य : १५ रु.
कृपया नमूने की प्रति मंगाने हेतु
१५ रु. के डाक टिकट अवश्य भेजें.
(सामान्य अंक : ४०-४४ पृष्ठ)

●**"कथाबिंब" अब फेसबुक पर भी** ●
facebook.com/kathabimb
आवरण पर नामित रचनाकारों से निवेदन है कि वे कृपया अपने नाम को "टैग" करें.

आवरण चित्र : तूलिका सक्सेना
"फॉल" ऋतु का एक मनोहारी चित्र, नैपरविल (शिकागो)

"कथाबिंब" मुंबई की "संस्कृति संरक्षण संस्था" के सौजन्य से प्रकाशित होती है.

कुछ कही, कुछ अनकही

यह २०१४ का अंतिम अंक (१२८वां) है. इस अंक के साथ *"कथाबिंब"* के प्रकाशन का एक और वर्ष पूरा हुआ. बहुत कोशिशों के बाद भी अंक के प्रकाशन में थोड़ा विलंब हुआ है. इसका मुख्य कारण समय पर पर्याप्त विज्ञापनों का न मिल पाना है. आज के संचार-युग में हर किसी के पास मोबाइल फ़ोन है. इस बाबत अनेक फ़ोन आये कि अंक कब आ रहा है. *"कथाबिंब"* के *"कहानी-विशेषांक"* की सर्वत्र सराहना हुई, फलस्वरूप डाक से व ई-मेल से प्रकाशनार्थ आने वाली रचनाओं की आवक बढ़ गयी है. इस संदर्भ में लेखकों से निवेदन है कि रचनाएं आप ई-मेल से अवश्य भेजें. पहला तो यह कि रचनाएं दोनों ही पीडीएफ व डॉक फाइल में हों. कहानी के निर्णय के लिए कम से कम कृपया एक माह का समय हमें दें. *"कथाबिंब"* के लिए खास तौर पर, अलग से कहानी भेजें, एक साथ कई पत्रिकाओं के लिए रचना भेजने पर विचार करना संभव नहीं होगा. *"कथाबिंब"* के पाठकों की संख्या में भी अभिवृद्धि हुई है, आजीवन सदस्यों की संख्या ३०० से ऊपर हो गयी है. *"कथाबिंब"* के माध्यम से सदा से, हमारा प्रयास रहा है कि कम मूल्य पर अच्छा साहित्य पाठकों को उपलब्ध हो. इसी कारण पिछले १५-२० सालों से पत्रिका के मूल्य में कोई वृद्धि नहीं की गयी है. वर्ष २०१४ के सभी अंकों में, कुल मिलाकर ४२ कहानियां प्रकाशित हुई हैं. इस बार *"कमलेश्वर-स्मृति कथाबिंब कथा पुरस्कार-२०१४"* के लिए अभिमत भेजने हेतु *"मत-पत्र"* नहीं छापा जा रहा है. पाठकों से अनुरोध है कि वे *"पच्चीसवें माले का फ़्लैट"* और *"उसका सच"* छोड़कर शेष ४० कहानियों पर, पत्र या मेल द्वारा, अभिमत का अपना क्रम भेजें. इस बार निर्णायकों का एक पैनल और पाठक मिल कर कहानियों के पुरस्कारों का चयन करेंगे. दो सर्वश्रेष्ठ (१००० रु.), चार श्रेष्ठ (७५० रु.) व दस को उत्तम (५०० रु.) पुरस्कार दिये जायेंगे. पाठकों से अनुरोध है कि वे शीघ्र अपने अभिमत हमें भेजें. वर्ष के सभी अंक आप *"कथाबिंब"* की वेबसाइट पर पढ़ सकते हैं. वेबसाइट के अलावा *"कथाबिंब"* को फ़ेसबुक पर भी देखा जा सकता है. आवरण पर नामित लेखकों से निवेदन है कि वे कृपया अपने नाम को *"टैग"* करें. इससे इनकी रचनाओं की *"पहुंच"* का दायरा और व्यापक होगा.

●

अब इस अंक की कहानियों पर टिप्पणी -- पांचों कहानियों के रचनाकार *"कथाबिंब"* के पाठकों के लिए जाने-पहचाने हैं. अपनी सदाशयता के चलते सभी ने अपनी बेहतर व स्तरीय कहानी दी है. मालती जोशी की कहानी *"अपहरण"* में ट्रेन यात्रा के दौरान अचानक ही राऊलकेला का नाम सुनकर नायिका फ़्लैश बैक में चली जाती है. जीवन में बहुत आगे निकल जाने के बाद भी उसके मन में कहीं न कहीं एक कसक रह ही गयी है, जिसकी टीस शेष है. अगली कहानी *"सर्वशिक्षा"* के माध्यम से डॉ. देवेंद्र सिंह ने हमारे देश के तथाकथित सर्वशिक्षा अभियान की सही स्थिति उजागर की है. शिक्षा का अधिकार तो सरकार ने दे दिया पर स्कूलों की स्थिति कैसी है ? न बच्चे हैं और न ही शिक्षक. ढहती दीवारें. दोपहर के खाने (मिड-डे मील) के मोह में बच्चे स्कूल आते हैं और जैसा-तैसा खा कर अपनी भूख मिटाते हैं. शेक्सपीयर का कहना था – *"वाट इज़ देयर इन ए नेम ?"* लेकिन इसके विपरीत सच्चाई यही है कि नाम में ही आज सब कुछ है. विशेषकर जब किसी के नाम से उसके चरित्र को जोड़ने की कोशिश की जाती है. डॉ. निरुपमा की कहानी *"कुसुममाला"* की नायिका का, अंत समय तक भी कोई नाम नहीं जानना चाहता. लेकिन यहां पहुंच कर कहानी एक अलग मोड़ लेती है. अगली कहानी *"कमज़ोर पार्टी"* (गोविंद उपाध्याय) में एक पति-पत्नी की शारीरिक कमियों के कारण उनके बच्चे नहीं हो सकते. पत्नी बच्चा गोद लेने को तैयार नहीं है. जीवन में इस अभाव के चलते आदमी को शराब पीने की लत लग जाती है और वह अंत तक इससे छुटकारा नहीं पा सका. आम भारतीय नागरिकों की समस्या है कि सीमित आय में घर-परिवार की ज़रूरतों को कैसे पूरा किया जाये ? विवेक द्विवेदी की कहानी *"कूलर"* की मां पढ़ी-लिखी नहीं है, लेकिन उसने ज़माना देखा है. वह बड़ी बहू पर हमेशा ग़ुस्सा करती रहती है. पर यह सब ऊपर-ऊपर है. दरअसल उसका हृदय एक कूलर की तरह है जो सबको ठंडक पहुंचाता रहता है.

●

वर्ष २०१४ चुनावों का साल रहा है. पहले लोकसभा चुनाव फिर कुछ उप-चुनाव और बाद में महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और जम्मू-कश्मीर में विधान सभा चुनाव संपन्न हुए. उप-चुनावों में भले ही भाजपा को अच्छा प्रतिसाद न मिल सका किंतु सभी विधानसभा चुनावों में भाजपा ने बढ़त हासिल की. हरियाणा और झारखंड में उसे स्पष्ट बहुमत मिला, महाराष्ट्र में भी अंततः शिवसेना के साथ मिल कर एक स्थायी सरकार बन सकी. जम्मू-कश्मीर में किसी भी दल को बहुमत न मिलने के कारण फिलहाल गवर्नर रूल लगा है, लेकिन ऐसे स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि शीघ्र ही पी. डी. पी. और भाजपा मिलकर सरकार बनायेंगे. इन राज्यों में कॉन्ग्रेस तीसरे या चौथे स्थान पर रही है. फरवरी २०१५ के प्रथम सप्ताह

में दिल्ली में भी चुनाव होने हैं. यहां भी कॉन्ग्रेस का कहीं पता नहीं है. सीधी लड़ाई आप और भाजपा में है. अब देखना यह है कि ऊंट किस करवट बैठता है. १२७ वर्ष पुरानी कॉन्ग्रेस का यह हाल क्यों हुआ इस पर पार्टी के नेताओं को गंभीरता से सोचना चाहिए किंतु बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे ? ज्यों ही कोई प्रयास करता है उसे बागी करार कर दिया जाता है.

भारत के गणराज्य बनने के बाद शुरू में विधान सभा और लोकसभा के चुनाव साथ-साथ हुआ करते थे. किन्हीं कारणों से, अलग-अलग समय पर विधान सभाएं भंग होने के कारण यह परंपरा समाप्त हो गयी है. इससे, निरंतर समय, श्रम और धन का अपव्यय होता है. सभी नेता और राजनीतिक दल पूरे साल चुनावी गणित में उलझे रहते हैं. सत्ता कैसे हाथ में रहे इसके लिए नये-नये जातीय समीकरण और हथकंडे ढूंढ़े जाते हैं. आज देश में भाजपा एक बड़े दल के रूप में उभरी है. अन्य दलों की सहमति से एक संयुक्त अधिवेशन बुलाकर पुनः इस लोकतांत्रिक परंपरा की स्थापना की जा सकती है. पिछले ७-८ महीनों में नयी सरकार ने ऐसे बहुत सारे निर्णय लिये हैं जिनके दूरगामी प्रभाव अवश्य होंगे. "स्वच्छता अभियान," "जन-धन योजना," "सांसद ग्राम योजना," "बेटी बचाओ, देश बचाओ" जैसी बहुत सारी स्कीमें शुरू की गयी हैं. चाहे शौचालयों की आवश्यकता की बात हो या युवाओं में नशे की प्रवृत्ति, छोटी-छोटी किंतु महत्वपूर्ण बातों के प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोगों को जागरूक कर रहे हैं. "मन की बात" कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री जनता से संवाद करते हैं. यह सब बहुत अच्छा है. लेकिन आम आदमी महंगाई और भ्रष्टाचार से निजात चाहता है. वह चाहता है कि रोज़मर्रा के जीवन-यापन में आने वाली तकलीफ़ों और कठिनाइयों से उसे जल्दी छुटकारा मिले. चुनाव प्रचार के दौरान विदेशी कालाधन एक बड़ा मुद्दा था. पिछले तीन-चार सालों में जन-लोकपाल आंदोलन ने भी आम आदमी के मन में आशा जगायी. इसी आंदोलन से "आप" का जन्म हुआ किंतु सारे देश में मुंह की खाने के बाद "आप" सिमटकर मात्र दिल्ली की पार्टी बनकर रह गयी है और अब प्रयास में है कि किस प्रकार छोड़ी हुई गद्दी हाथ में आ जाये. कोई तो केजरीवाल जी से पूछे कि भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी जन-लोकपाल बिल का क्या हुआ ?

विदेशी कालाधन आने में कई तकनीकी समस्याएं बतायी जा रही हैं. यदि भविष्य में कभी यह कालाधन थोड़ा कुछ आया भी तो सीधे किसी के खाते में नहीं जाने वाला. ये सब मन को बहलाने-फुसलाने वाली बातें हैं. लेकिन विदेशी कालेधन से कहीं ज़्यादा देश में ही लोगों की तिज़ोरियों में ज़मा कालेधन को बाहर लाने के लिए तो तुरत-फुरत कारगर उपाय किये जा सकते हैं. सबसे अधिक कालाधन लोगों के रहने के लिए मकान बनाने वाले छोटे-बड़े भवन निर्माता पैदा करते हैं. यह सर्वविदित है कि मकान के ख़रीदने के लिए ६० : ४० या ५० : ५० के अनुपात में पैसे की मांग की जाती है. इससे स्टैंप ड्यूटी की चोरी तो होती ही है. साथ ही दो नंबर के पैसे का आगे ग़लत-सलत कामों में दुरुपयोग होता है. भवन निर्माण उद्योग अकूत कालाधन उत्पादित करता है, इसकी गणना नहीं की जा सकती. इसी तरह फ़िल्म उद्योग की सारी नींव ही कालेधन पर खड़ी हुई है, यह बात भी किसी से छिपी नहीं है. नामी फ़िल्म कलाकारों को करोड़ों में पैसा दिया जाता है. यह पैसा कहां से आता है और कहां जाता है किसी को नहीं मालूम. हर छोटे-बड़े धंधे वाला बिल और बिना बिल की बिक्री करता है. सेल्स टैक्स की चोरी करता है. सरकार चाहे तो एक समय सीमा देकर पांच सौ और हज़ार रुपयों के नये नोट ज़ारी करके सारा कालाधन बाहर ला सकती है. महंगाई को कम करने के लिए भी कई क़दम उठाये जा सकते हैं. सबसे पहले तो ज़माखोरी को अपराध की ऐसी धारा के अंतर्गत लाया जाये कि ज़माखोरों को जमानत ही न मिल सके. आज बाज़ारों में सामान भरा पड़ा है. लेकिन गुणवत्ता या मूल्य पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है. सरकार अधिकतम कीमत तय कर देती है, इसका आधार स्पष्ट नहीं है. लागत और मूल्य में क्या संबंध है ? दो रुपये लागत की चीज़ की कीमत बीस रुपये क्यों होती है ? अपेक्षा यह की जाती है कि ग्राहक मोलभाव करके स्वयं कीमत कम कराये, यह असंभव है. टी. वी. के विज्ञापन महंगाई का सबसे बड़ा कारण हैं. हर विज्ञापन में फ़िल्म कलाकार क्यों होते हैं ? अमिताभ बच्चन नवरत्न तेल या कैडवरी चॉकलेट बेचेंगे तो वह महंगी तो होगी ही. शाहरुख खान, अक्षय कुमार, हेमा मालिनी, करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा या ऐसी ही फ़िल्मी हस्तियां विज्ञापन करेंगी तो सामान तो महंगा होगा ही. अप्रत्यक्ष रूप में विज्ञापनों में इनकी मौजूदगी का ख़र्चा हम और आप उठाते हैं. टी. वी. अब महज़ "बुद्धू डब्बा" नहीं रह गया है, यह पूरी तरह "झूठ का डब्बा" हो गया है. **चौबीसों घंटे यह हमारे ऊपर दोहरी मार कर रहा है. पहले बिना सिर-पैर के सीरियल दिखाकर यह आपको पूरी तरह असंवेदी बनाता है, साथ में बार-बार विज्ञापन दिखा कर उल्टे-सीधे सामान की बिक्री बढ़ाता है. वैज्ञानिक आधार वाले विज्ञापनों का कोई आधार नहीं होता.** टूथपेस्ट के प्रभाव को जांचने के लिए "जर्मो-मीटर" (!) बना ही नहीं. सिगरेट के विज्ञापनों पर पाबंदी है पर गुटका के विज्ञापनों पर कोई रोक नहीं. शराब के विज्ञापन भी धड़ल्ले से चोरी-छुपे दिखाये ही जा रहे हैं. एक घंटे में कितने समय विज्ञापन दिखाना चाहिए, इस पर नियंत्रण होना चाहिए. विज्ञापन के साथ दिखायी चेतावनी इतने छोटे अक्षरों में होती है और इतने कम समय के लिए दिखायी जाती है कि कोई पढ़ नहीं सकता. आइए, हम उम्मीद करें कि "अच्छे दिन" दूर नहीं हैं.

अरविंद

लेटर-बॉक्स

▸▸ 'कथाबिंब' का अंक १२७ मिला. हर अंक बहूमूल्य होता है. आवरण चित्र से लेकर अंतिम पेज़ तक, एक-एक शब्द अनूठा, दिमाग़ को सकून देता है. अब मैं (२४ मई २०१४) की बात करती हूं. वह शाम शायद मैं जीवन भर न भूल सकूंगी. इतना आदर, इतना सत्कार मुझ जैसी एक छोटी सी लेखिका और अभिनेत्री को मिला. सभागृह में मेरे नाम के बड़े-बड़े पोस्टर लगाये गये. स्टेज़ पर, बड़ी हस्तियों के साथ मुझे बैठाया. मुझसे दीप प्रज्वलित भी करवाया.

'कथाबिंब' ने ३५ वर्ष पूरे किये. बहुत-बहुत बधाइयां. मुझे प्रोग्राम में बुलाया मैं अहसानमंद हूं. लेकिन प्लीज़ मुझे एक आम लेखिका ही रहने दीजिए.

प्रिय पाठकों, आपसे निवदेन है नया साल आ रहा है. किसी भी लेखक या लेखिका को कोई ऐसे शब्द न कहें जिनसे कि भीतर मन में दुख हो. हर व्यक्ति महान लेखक नहीं बन सकता. सबकी अपनी-अपनी शैली होती है. जो व्यक्ति के स्वभाव, उसका जीवन, रहन-सहन से बनती है. इसलिए ज़्यादा त्रुटियां निकालना भी ठीक नहीं. एक शेर है —

मंदिर तोड़ो, यह तो बुतखाने हैं,
लेकिन किसी का दिल मत तोड़ो,
यह घर है ख़ास खुदा का.

मैं आप सबसे बहुत स्नेह करती हूं. आपकी वजह से ही तो मेरी कला की परख हो रही है. आप और संपादक जी जब तक चाहेंगे मैं लिखती रहूंगी. जब तक मेरी सांस की डोर मेरी क़लम से बंधी है. नये साल की ढेरों शुभकामनाएं और ढेर सारा प्यार, स्नेह.

– सविता बजाज

पो. बॉक्स-१९७४३, जयराज नगर, बोरिवली (प.), मुंबई-४०००९२.

▸▸ 'कथाबिंब' का १२७ वां अंक (जुलाई-सितंबर २०१४) प्राप्त हुआ. इस अंक की पांच कहानियां. कमल कपूर की 'न भूतो, न भविष्यति' एक नरकवासिनी गुलाब देई की कहानी है, जो दूसरों के नर्क को स्वर्ग में तब्दील कर देती है. ताराचंद मकसाने की 'थैंक्यू वेरी मच' एक सेवा निवृत्त अनुशासनप्रिय बैंक मैनेज़र रविकुमार की कथा है, जिसकी सेवा निवृत्ति की दिनचर्या उसे निठल्ला, निकम्मा और नाकारा बना देती है. एक अनाथ आश्रम 'आशा ट्रस्ट' से जुड़ने के बाद रवि में आश्चर्यजनक परिवर्तन आता है और वे पुन: सेवाकालीन अप–टू-डेट रवि कुमार में रूपांतरित हो जाते हैं. रिया शर्मा की 'सर्प दंश' एक स्त्री की सनातन कथा है. वह कितनी ही पढ़ी लिखी हो उसे घर के कामकाज में झोंक दिया जाता है और पुरुष पुरातन सर्वतंत्र स्वतंत्र जीवन यापन करता है. स्त्री के गृह कार्य में संलिप्तता की प्रशंसा के शब्द उसके लिए सर्पदंश हैं, स्त्री जीवन पर्यंत सर्पदंशित रहती है. निरुपम की 'अतृप्त मोक्ष' एक कहानी से ज़्यादा दार्शनिक संवाद है, संवाद भी तब सार्थक होता है जब दोनों समतल हों, यहां तो संवाद के नाम पर एक साध्वी का अनंत उवाच है. धर्मेंद्र कुसुम की 'धोखा' में स्त्री तो एक मदारी के धोखे का शिकार होती है और मिथ्या जड़ी–बूटियां ख़रीद लाती है जबकि पुरुष को एक शाश्वत राजनेता से धोखा मिलता है जो जनता को सब्ज़ बाग दिखा कर पांच सालों के लिए ओझल हो जाता है. कथाकार ने राजनैतिक धोखे को बड़ा धोखा सिद्ध किया है, यही उसका अभीष्ट है.

– हितेश व्यास

बी-४०६, रवि पार्क, हांडेवाडी रोड,
हडपसर, पुणे-४११०२८.

▸▸ 'कथाबिंब' का आजीवन सदस्य बनने से नियमित अंक मिल रहे हैं. मैं रचनाओं को पढ़कर आनंदित और उत्साहित होता रहता हूं.

पत्रिका ने ३५ वर्षों की साहित्यिक यात्रा में हिंदी साहित्य में अपनी अलग पहचान और स्थान बना लिया है. रचनाओं का समन्वय मन-भावन होता है. जनवरी-जून २०१४ अंक (कहानी विशेषांक) पढ़ा इसमें ३२ कहानियां, ९ लघुकथाएं, १२ ग़ज़लें, कविताएं व मुक्तक हैं. इस

विशेषांक में स्तरीय रचनाएं हैं. 'कुछ कही, कुछ अनकही' में तो आप दिल की गहराई में उतरते हैं. इस तरह यह अंक संग्रहणीय है. डॉ. रूपसिंह चंदेल अतिथि संपादक को नमस्कार जिन्होंने 'कथाबिंब' को आधुनिक हिंदी कहानी के इतिहास में संग्रहणीय बना दिया है. मैं पत्रिका से जुड़कर अपने को धन्य महसूस कर रहा हूं.

- *राजेंद्र प्रसाद मधुबनी*

फ्रेंडस कॉलोनी, वार्ड नं. १४, मधुबनी, बिहार-८४७२११

▶▶ 'कथाबिंब' के जुलाई-सितंबर २०१४ अंक में संपादकीय में मोदी सरकार के आगमन के तत्काल बाद उनकी क्रियाशीलता एवं भावी योजना का सच्चा चित्र खींचा गया है. मोदी जानते हैं कि यहां संभावनाएं अनंत हैं, बस उन्हें उजागर करने की ज़रूरत है. दुष्यंत कुमार याद आ जाते हैं : 'एक चिंगारी कहीं से ढूंढ़ लाओ दोस्तो, इस दिए में तेल से भींगी हुई बाती तो है.'

कबीर ने फरमाया था — 'दुई जगदीश कहां ते आये, कहु कौने भरमाया/अल्ला, राम, करिम, केशव, हरि, हजरत नाम धराया.' और यहां देवी नागरानी कहती हैं — 'ये हिंदू हैं, ये मुस्लिम हैं, ये सिख ईसाई हैं देवी/लड़ाने को हमें क्यों लोग इनका नाम लेते हैं.''

नारी में छिपी मां की ममता, वत्सलता का कितना भव्य चित्र उकेरा गया है — 'मां, केवल मां होती है.' (लक्ष्मी रूपल).

अशोक भाटिया की 'जन्म' कविता में लड़की के जन्म होने के प्रभाव की व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया है. इंसान रहबर की खोज में व्यस्त है पर निराशा पाता है. 'दौर, जुल्म व सितम का जारी है / कोई रहबर कहां नज़र आया.' सारी रचनाओं पर टिप्पणी लिखना हो तो पत्र बहुत लंबा हो जायेगा.

- *प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय*

वृंदावन, राजेंद्र पथ, धनबाद-८२६००१

▶▶ 'कथाबिंब' का जुलाई-सितंबर २०१४ अंक का संपादकीय न केवल साहित्यिक कर्म के लिए बल्कि भारतीय राजनीति का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करने के लिए जाना जायेगा. रचनाओं का चयन उनकी स्तरीयता को ध्यान में रखकर सावधानी के साथ किया गया है. कमल कपूर की कहानी 'न भूतो, न भविष्यति' मध्यमवर्गीय आरामतलबी व मतलबपरस्ती तथा निम्न वर्ग के मेहनतकश इंसानों की कशमकश और ख़ुद्दारी की दास्तान है. ताराचंद मकसाने की कहानी 'थैंक्यू वेरी मच' इस हक़ीकत को रेखांकित करती है कि औरों के लिए कुछ करना ही मन के रीतेपन और आसपास के बेग़ानेपन को भगाने का तरीक़ा है. धर्मेंद्र कुसुम अपनी कहानी 'धोखा' में आमजन के साथ हुए छल की बात करते हैं. दरअसल राजनीति धोखा और बारंबार छलकरने की कला में बाक़ी सब को काफ़ी पीछे छोड़ चुकी है. कहानी के पात्र रामलाल के मन की बात का मन में ही रह जाना इस सच्चाई को दर्शाता है.

सविता बजाज का आत्मकथ्य व डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी से साक्षात्कार पठनीय हैं. कमलेश भारतीय की लघुकथा 'डर' वर्तमान आर्थिक प्रणाली में जिसमें हर इंसान एक उपभोक्ता के सिवा कुछ नहीं माना जाता है, एक आम हिंदुस्तानी की हैसियत प्रदर्शित करता है. इससे पूर्व जनवरी-जून २०१४ के संयुक्तांक में हिंदी कहानी के समकालीन परिदृश्य का काफ़ी हद तक चित्रांकन हुआ. 'कथाबिंब' की यह यात्रा जारी रहेगी इसका पूर्ण विश्वास है.

- *मनीष कुमार सिंह*

कमरा नं. १४८-बी, परिवहन भवन, संसद मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१.

▶▶ 'कथाबिंब' जुलाई-सितंबर २०१४ का अंक प्राप्त हुआ. कहानी विशेषांक पर कुछ प्रवासी कथाकारों को अपनी प्रतिक्रिया अमेरिका, पत्रों के माध्यम से भेजी थी, आपने इस बार के अंक में अपने संपादकीय 'कुछ कही, कुछ अनकही' में इसका ज़िक्र भी किया है.

वर्तमान समय में पत्रलेखन विधा संचार क्रांति के इस युग में दम तोड़ रही है. मैंने इस विधा को बनाये रखने के लिए रचनाकारों के साथ पत्राचार की परंपरा बनाये रखी है. यही पत्र आनेवाले कल की धरोहर होंगे. आज भी मैं जब हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकारों के पत्रों को पढ़ता हूं तो मेरे सामने उनका व्यक्तित्व एवं कालखंड सामने आ खड़ा होता है. ये पत्र हमारे लिए अमूल्य निधि हैं. कहानी अंक संग्रहणीय अंक है, सभी कहानियां पठनीय व हृदयग्राही हैं.